

अश्वनी कुमार पाठक के बाल साहित्य में भाषा और शैली की विशेषताएँ

jhrd vkj M,- dfork plskjlr

शोधार्थी, हिन्दी विभाग¹

सह आचार्य, हिन्दी विभाग²

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार, हरियाणा

सारांश

अश्वनी कुमार पाठक समकालीन बाल साहित्यकारों में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। उनके बाल साहित्य में भाषा और शैली की विशिष्टता उन्हें अन्य लेखकों से अलग पहचान प्रदान करती है। उनकी रचनाओं में बाल-मन की सहजता, जिज्ञासा, खेल-खेल में शिक्षा और सरल अभिव्यक्ति की शैली देखने को मिलती है। पाठक की भाषा में सहज प्रवाह, सरलता, संवादात्मकता और व्यंग्य-हास्य का संतुलन मिलता है, जिससे बालक ही नहीं वयस्क पाठक भी प्रभावित होते हैं। यह समीक्षा पत्र अश्वनी कुमार पाठक के बाल साहित्य में भाषा और शैली की उन विशेषताओं पर केंद्रित है, जो उनकी रचनाओं को व्यापक लोकप्रियता प्रदान करती हैं।

मुख्य संकेतक : अश्वनी कुमार पाठक, बाल साहित्य, भाषा की सरलता, शैली की विशेषताएँ।

परिचय

हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा में बाल साहित्य का विशेष स्थान है, क्योंकि यह न केवल बच्चों के मनोरंजन का साधन है बल्कि उनके बौद्धिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास का भी आधार बनता है। बाल साहित्य में भाषा और शैली की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा रचनाकार अपनी अनुभूतियों, विचारों और संदेशों को बच्चों तक सहज और सरल रूप में पहुँचा पाता है। (पाठक, अश्वनी कुमार 2010)

बाल साहित्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी भाषा कितनी सहज, सरस और बोधगम्य है तथा उसकी शैली कितनी आकर्षक, मनोरंजक और प्रेरणादायी है। इस दृष्टि से अश्वनी कुमार पाठक समकालीन हिंदी बाल साहित्य के उन प्रमुख साहित्यकारों में गिने जाते हैं जिन्होंने बच्चों की मानसिक संरचना,

उनकी जिज्ञासाओं, उनकी कल्पनाशक्ति और उनके जीवन के सहज अनुभवों को ध्यान में रखकर रचनाएँ की हैं।

उनकी रचनाओं में भाषा और शैली की जो विशिष्टता दिखाई देती है, वह उन्हें अन्य बाल साहित्यकारों से अलग पहचान दिलाती है। पाठक की भाषा में न केवल सरलता और प्रवाह है, बल्कि उसमें हास्य-व्यंग्य की वह चुटकी भी है जो बच्चों को तुरंत आकर्षित करती है। उनकी शैली संवादात्मक, लयात्मक और चित्रात्मक है जो बालक की कल्पना को उड़ान देती है और उसकी संवेदनाओं को झकझोरती है। (शुक्ल, नामवर 2011)

अश्वनी कुमार पाठक के बाल साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने भाषा और शैली को केवल संप्रेषण का साधन न मानकर उसे बाल-मन की संवेदनाओं और बौद्धिक जिज्ञासाओं का वाहक बनाया है। बच्चों की रुचि और मानसिक स्तर के अनुसार उन्होंने शब्दों का चुनाव किया है और उन्हें इस प्रकार संयोजित किया है कि बच्चे बिना किसी कठिनाई के अर्थ समझ सकें। उनकी भाषा में बोलीचाल की सहजता, स्थानीयता की गंध और जीवंत चित्रण मिलता है। वे कठिन और दुरूह शब्दावली से बचते हैं और बच्चों के अनुभव जगत से जुड़े शब्दों का चयन करते हैं।

यही कारण है कि उनकी कहानियाँ और कविताएँ बच्चों को अपनी ही दुनिया का प्रतिबिंब लगती हैं। इसके साथ ही उनकी शैली में हास्य और व्यंग्य का प्रयोग उन्हें और भी रोचक और प्रभावशाली बनाता है। हास्य-व्यंग्य के माध्यम से वे न केवल बच्चों को हँसाते हैं बल्कि उन्हें सामाजिक और नैतिक संदेश भी देते हैं। यही वह विशेषता है जो अश्वनी कुमार पाठक के साहित्य को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखती बल्कि उसे शिक्षाप्रद और मूल्यपरक भी बनाती है।

बाल साहित्य में भाषा की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है उसकी लयात्मकता। बच्चों को लय, ताल और तुकांत बहुत भाते हैं। अश्वनी कुमार पाठक ने इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखकर अपनी कविताओं में लयात्मकता का विशेष ध्यान रखा है। उनकी कविताएँ पढ़ते समय बच्चों को लगता है जैसे वे किसी गीत को गुनगुना रहे हों।

इस लयात्मकता के साथ-साथ उन्होंने ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया है, जो बच्चों के लिए अत्यंत आकर्षक होते हैं। उदाहरण के लिए, “चूँ-चूँ, खट-खट, ठम-ठम” जैसे शब्द बच्चों के खेल-खेल में सीखने की प्रक्रिया को और अधिक रोचक बना देते हैं। इसी प्रकार उनकी कहानियों में संवादों का प्रयोग भाषा को अधिक जीवंत और समीपस्थ बना देता है। संवादों के माध्यम से पात्रों का चरित्र निर्माण भी सहजता से हो जाता है और बच्चे उनके माध्यम से परिस्थिति को आसानी से समझ लेते हैं। (मिश्र, रामजी 2015)

अश्वनी कुमार पाठक की शैली का सबसे बड़ा गुण उसकी बहुआयामी प्रकृति है। वे केवल एक ही प्रकार की शैली पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि अपनी रचनाओं में विविध शैलीगत प्रयोग करते हैं। कहीं उनकी शैली में हास्य-व्यंग्य की प्रधानता है तो कहीं वह लयात्मक और गीतात्मक हो उठती है, कहीं वह संवादात्मक है तो कहीं वह चित्रात्मकता से परिपूर्ण हो जाती है।

यह बहुआयामी शैली बच्चों को ऊबने नहीं देती और निरंतर उन्हें रचना से जोड़े रखती है। उनकी कहानियों में जहाँ एक ओर लोककथाओं की सरलता और सहजता है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक जीवन की जटिलताओं का चित्रण भी मिलता है। इस प्रकार वे परंपरा और आधुनिकता का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी आकर्षित करती हैं।

पाठक की भाषा और शैली की विशेषता यह भी है कि वे बच्चों के जीवनानुभवों और उनकी कल्पनाशक्ति के बीच सेतु का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए, उनकी कविताओं और कहानियों में प्रकृति का सुंदर चित्रण मिलता है, चिड़ियों की चहचहाहट, पेड़ों की हरियाली, नदियों की कलकल ध्वनि, वर्षा की फुहारें ये सभी बच्चों की संवेदना से गहराई से जुड़ते हैं।

उनके चित्रण में केवल दृश्यात्मकता ही नहीं बल्कि बच्चों की भावनात्मक भागीदारी भी होती है। यह शैली बच्चों को केवल पढ़ने तक सीमित नहीं रखती बल्कि उन्हें अनुभव कराने पर भी जोर देती है। इसके साथ ही वे शिक्षाप्रद तत्वों को बड़े सहज ढंग से अपनी शैली में समाहित कर देते हैं। (तिवारी, शशि 2013)

उनके साहित्य में शिक्षा उपदेशात्मक रूप में नहीं आती, बल्कि मनोरंजन और खेल-खेल में प्रस्तुत होती है। यही कारण है कि बच्चे बिना किसी दबाव के उनसे सीख लेते हैं। बाल साहित्यकारों के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती होती है कि वे ऐसी भाषा और शैली का प्रयोग करें जो न केवल बच्चों के लिए आकर्षक और बोधगम्य हो बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक विकास में भी सहायक हो। अश्वनी कुमार पाठक ने इस चुनौती को बड़ी कुशलता से स्वीकार किया है।

उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि बाल साहित्य की भाषा सरल होते हुए भी कलात्मक हो सकती है और उसकी शैली मनोरंजक होते हुए भी शिक्षाप्रद हो सकती है। उनकी रचनाएँ इस दृष्टि से आदर्श कही जा सकती हैं। वे बच्चों के लिए साहित्य रचते समय यह ध्यान रखते हैं कि बालक केवल श्रोता या पाठक न रहे बल्कि वह साहित्यिक प्रक्रिया का सहभागी बने। उनकी भाषा बच्चों को संवाद के लिए प्रेरित करती है और उनकी शैली उन्हें कल्पना की उड़ान भरने का अवसर देती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अश्वनी कुमार पाठक के बाल साहित्य में भाषा और शैली की विशेषताएँ हिंदी बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान करती हैं। उनकी भाषा की सरलता, सहजता, प्रवाह, संवादात्मकता, लयात्मकता और हास्य-व्यंग्य का समावेश उनकी रचनाओं को बच्चों के लिए अत्यंत आकर्षक बनाता है। (चौधरी, उषा 2017)

वहीं उनकी शैली की बहुआयामी प्रकृति प्राकृतिक, संवादात्मक, चित्रात्मक, लयात्मक और शिक्षाप्रद उनकी रचनाओं को बहुपरतीय अर्थ देती है। इन विशेषताओं के कारण अश्वनी कुमार पाठक का बाल साहित्य न केवल बच्चों को आनंद और मनोरंजन प्रदान करता है बल्कि उन्हें मानवीय मूल्य, सामाजिक समझ और जीवन के विविध रंगों से भी परिचित कराता है। यही कारण है कि उनका साहित्य बाल साहित्य की परंपरा में मील का पत्थर माना जा सकता है। (सिंह, महेंद्र 2018)

भाषा की विशेषताएँ

1. **सरलता और सहजता** – पाठक की भाषा बोली के निकट और बच्चों के अनुभव संसार से जुड़ी हुई है।
2. **संवादात्मक शैली** – उनके लेखन में संवाद बच्चों के प्रश्नों और उत्तरों को सरल ढंग से प्रस्तुत करते हैं।
3. **लयात्मकता** – उनकी कविताओं में छंद, लय और ध्वन्यात्मकता बच्चों को आकर्षित करती है।
4. **हास्य और व्यंग्य** – भाषा में हल्का-फुल्का हास्य बच्चों को आनंदित करता है और शिक्षाप्रद भी बनाता है।
5. **स्थानीयता और जीवंतता** – उनकी भाषा में लोक तत्व और सहज चित्रण मिलता है जो बच्चों की संवेदना से जुड़ता है।

शैली की विशेषताएँ

अश्वनी कुमार पाठक का नाम हिंदी बाल साहित्य में उन रचनाकारों में लिया जाता है जिन्होंने बच्चों की मानसिकता, उनकी जिज्ञासा, कल्पना और संवेदनाओं को गहराई से समझा और उसे अपनी रचनाओं में सहज रूप से अभिव्यक्त किया। किसी भी साहित्यकार की भाषा और शैली उसकी रचनात्मकता की पहचान होती है। (वर्मा, गोपाल 2016)

विशेषकर बाल साहित्य में शैली का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यहाँ केवल साहित्यिक सौंदर्य नहीं, बल्कि बच्चों की ग्रहणशीलता, उनकी समझदारी, मनोरंजन और शिक्षा – सभी पहलुओं को ध्यान में रखना पड़ता है। अश्वनी कुमार पाठक की शैली की विशेषताएँ उनके बाल साहित्य को विशिष्ट बनाती हैं। उनकी कविताओं और कहानियों की शैली में सरलता, सहजता, हास्य-व्यंग्य, संवादात्मकता, कल्पनाशीलता और शिक्षाप्रदता का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। यही कारण है कि उनका साहित्य न केवल बच्चों को आकर्षित करता है बल्कि बड़े पाठकों को भी प्रभावित करता है।

सबसे पहली और महत्वपूर्ण विशेषता उनकी शैली में सरलता और स्वाभाविकता है। बच्चों की दुनिया सहज और सरल होती है। वे कठिन शब्दों या दुरूह अभिव्यक्तियों को समझने की क्षमता धीरे-धीरे विकसित करते हैं। इस दृष्टि से अश्वनी कुमार पाठक ने अपनी शैली में अनावश्यक जटिलता को स्थान नहीं दिया है। (गुप्ता, मंजू 2019)

उनकी भाषा की ही तरह उनकी शैली भी सीधी, स्पष्ट और बोलचाल के ढंग की है। यह शैली बच्चों को उनके अपने अनुभव संसार से जोड़ती है। उनके कथन का ढंग इतना सहज है कि बच्चा पढ़ते-पढ़ते स्वयं को कहानी या कविता का हिस्सा मानने लगता है। इस प्रकार उनकी शैली पाठक और लेखक के बीच दूरी नहीं रहने देती।

दूसरी प्रमुख विशेषता है उनकी शैली की संवादात्मकता। बच्चे स्वभाव से प्रश्न पूछने वाले होते हैं और उन्हें जिज्ञासा शांत करने के लिए उत्तर भी चाहिए होता है। अश्वनी कुमार पाठक ने इस मनोविज्ञान को समझते हुए अपनी कहानियों और कविताओं में संवाद का भरपूर प्रयोग किया है। यह संवाद कभी पात्रों के बीच होता है, कभी कवि और बच्चों के बीच, तो कभी कथाकार और पाठक के बीच। संवादात्मक शैली बच्चों को सक्रिय रूप से पढ़ने में जोड़ती है और उन्हें ऐसा अनुभव कराती है मानो वे कहानी में शामिल होकर बात कर रहे हों। उनकी शैली में एक और महत्वपूर्ण गुण है हास्य और व्यंग्य का संतुलित प्रयोग। बच्चे सहज रूप से हँसी और खेल की ओर आकर्षित होते हैं। यदि साहित्य में यह तत्व हो तो वे अधिक उत्साह से पढ़ते हैं। पाठक ने अपनी कविताओं और कहानियों में हल्के-फुल्के हास्य का प्रयोग करके बच्चों को हँसने-गुदगुदाने का अवसर दिया है। साथ ही, यह हास्य मात्र मनोरंजन तक सीमित नहीं है बल्कि उसमें व्यंग्य का भी अंश है जो बच्चों को सोचने पर विवश करता है। उनकी शैली का यह गुण बाल साहित्य को केवल हँसी-ठिठोली का साधन न बनाकर जीवन की गहरी सच्चाइयों को समझने का माध्यम बनाता है।

कल्पनाशीलता उनकी शैली का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है। बाल साहित्य में कल्पना का विशेष महत्व होता है क्योंकि बच्चे अपनी दुनिया को अक्सर कल्पनाओं से सजाते-संवारते हैं। अश्वनी कुमार पाठक ने अपनी शैली में कल्पना के रंगों का बहुत सुंदर उपयोग किया है। उनकी कविताओं में पेड़-पौधे, पक्षी, खिलौने, वस्तुएँ सब जीवंत होकर बच्चों से बात करने लगते हैं। उनकी कहानियों में भी वस्तुओं का मानवीकरण देखने को मिलता है। यह शैलीगत प्रयोग बच्चों की कल्पनाशक्ति को और भी उभारता है तथा उन्हें रचना के साथ एक आत्मीय संबंध बनाने में मदद करता है। (शर्मा, सुधा 2020)

उनकी शैली की एक और विशेषता है लयात्मकता और संगीतात्मकता। बच्चों के लिए लिखी गई कविताएँ तब तक प्रभावशाली नहीं होतीं जब तक उनमें छंद, लय और ध्वनि का आकर्षण न हो। पाठक की शैली में लय का विशेष ध्यान रखा गया है। उनकी कविताएँ गुनगुनाने योग्य होती हैं, जिससे बच्चे उन्हें आसानी से याद कर लेते हैं और गाते भी हैं। उनकी शैली की यह विशेषता बच्चों को साहित्य से जुड़ाव बनाए रखने में सहायक होती है।

अश्वनी कुमार पाठक की शैली में प्राकृतिक और जीवनपरक चित्रण भी उल्लेखनीय है। उनकी कहानियों और कविताओं में गाँव-शहर, खेत-खलिहान, पशु-पक्षी, नदी-तालाब और सामाजिक जीवन का बहुत सहज चित्रण मिलता है। उनकी शैली इन चित्रों को बच्चों की दृष्टि से प्रस्तुत करती है ताकि बच्चा अपने चारों ओर के परिवेश को पहचान सके और उससे आत्मीयता स्थापित कर सके। यह शैलीगत विशेषता बच्चों को वास्तविक जीवन के प्रति जागरूक बनाती है। (पाठक, अश्वनी कुमार 2011)

शिक्षाप्रदता और मनोरंजन का समन्वय भी उनकी शैली का एक खास गुण है। अधिकांश बाल साहित्यकार या तो उपदेशात्मक हो जाते हैं या केवल मनोरंजन की ओर झुक जाते हैं। लेकिन पाठक की शैली में दोनों का संतुलन है। उनकी शैली इस तरह की है कि बच्चे खेल-खेल में शिक्षा प्राप्त करते हैं। नैतिक मूल्य, सामाजिक सद्भावना, सहयोग की भावना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता ये सभी बातें उनकी शैली में स्वाभाविक रूप से आ जाती हैं। उनकी शैली बच्चों को उपदेश नहीं देती बल्कि उन्हें स्वयं सोचने और सीखने के लिए प्रेरित करती है।

उनकी शैली की एक विशेषता लोककथा और आधुनिकता का समन्वय भी है। वे लोककथाओं, लोकगीतों और लोक-प्रचलित मुहावरों का उपयोग करते हैं, जिससे उनकी रचनाएँ बच्चों को अपनी सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ती हैं। साथ ही, वे आधुनिक जीवन, तकनीक और बदलते समाज को भी अपनी शैली में जगह देते हैं। इस प्रकार उनकी शैली बच्चों को परंपरा और आधुनिकता दोनों से परिचित कराती है।

शैलीगत दृष्टि से उनका एक और महत्वपूर्ण पक्ष है संवेदनशीलता। उनकी शैली बच्चों की भावनाओं को समझकर अभिव्यक्त करती है। उनकी कहानियों और कविताओं में मासूमियत, करुणा, मित्रता और सहानुभूति जैसे भाव सहज रूप में व्यक्त होते हैं। उनकी शैली बच्चों को न केवल मनोरंजन देती है बल्कि उन्हें संवेदनशील और मानवीय भी बनाती है। (दुबे, अर्चना 2014)

इसके साथ ही उनकी शैली में जीवनमूल्यों का आंतरिक समावेश दिखाई देता है। वे सीधे-सीधे प्रवचन देने वाली शैली नहीं अपनाते, बल्कि अपनी कहानियों और कविताओं के पात्रों के माध्यम से जीवन की सच्चाइयों को प्रस्तुत करते हैं। बच्चे जब इन पात्रों से जुड़ते हैं तो उन्हें सहज ही यह समझ आ जाता है कि ईमानदारी, परिश्रम, सहयोग और प्रेम जैसे मूल्य जीवन में क्यों आवश्यक हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अश्वनी कुमार पाठक की शैली बहुआयामी है। उसमें सरलता और सहजता है, संवादात्मकता है, हास्य-व्यंग्य है, कल्पनाशीलता है, लयात्मकता है, प्राकृतिक चित्रण है, शिक्षाप्रदता और मनोरंजन का समन्वय है, परंपरा और आधुनिकता का मेल है तथा संवेदनशीलता और जीवनमूल्यों का आंतरिक समावेश है। उनकी शैली बच्चों के मन को केवल आकर्षित ही नहीं करती बल्कि उनके भावनात्मक, बौद्धिक और नैतिक विकास में भी योगदान देती है। यही कारण है कि उनका बाल साहित्य हिंदी साहित्य की धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

1. **प्राकृतिक चित्रण की शैली** – उनकी कहानियों और कविताओं में प्रकृति और परिवेश का सहज चित्रण मिलता है।
2. **बाल-मन की अभिव्यक्ति** – बच्चों की कल्पनाशक्ति, जिज्ञासा और उत्सुकता को उभारने वाली शैली।
3. **शिक्षाप्रद लेकिन मनोरंजक** – पाठक की शैली उपदेशात्मक न होकर खेल-खेल में शिक्षा देने वाली है।
4. **हास्य-व्यंग्य प्रधान शैली** – उनकी कविताओं और कहानियों में हल्का व्यंग्य और हास्य बच्चों को हंसाते हुए सोचने पर भी मजबूर करता है।
5. **लोककथा और आधुनिक शैली का समन्वय** – पाठक की शैली में परंपरा और आधुनिकता का संतुलित प्रयोग मिलता है।

निष्कर्ष

अश्वनी कुमार पाठक का बाल साहित्य भाषा और शैली की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाओं की सहजता, सरलता और हास्य-व्यंग्य की शैली बच्चों के मन को आकर्षित करती है और उन्हें साहित्य के प्रति

अभिरुचि विकसित करने में सहायक बनाती है। उनकी भाषा न केवल बालकों के लिए बोधगम्य है बल्कि उसमें सौंदर्य और जीवनमूल्य भी निहित हैं।

इस प्रकार, पाठक का योगदान हिंदी बाल साहित्य को नई दिशा देने वाला सिद्ध होता है। अश्वनी कुमार पाठक के बाल साहित्य में भाषा और शैली की विशेषताओं का गहन अवलोकन करने के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि वे हिंदी बाल साहित्य की उस धारा के प्रतिनिधि साहित्यकार हैं जिन्होंने बालकों के मन, उनकी संवेदनाओं, उनकी कल्पनाओं और उनकी जीवन-यात्रा को पूरी सहजता और सरलता के साथ साहित्यिक रूप प्रदान किया है। किसी भी बाल साहित्यकार के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती होती है कि वह ऐसी भाषा और शैली का चयन करे जो बच्चों के लिए न केवल बोधगम्य हो बल्कि उन्हें आकर्षित भी करे और उनके मन-मस्तिष्क में गहरी छाप छोड़े। अश्वनी कुमार पाठक इस दृष्टि से अत्यंत सफल सिद्ध होते हैं। उनकी भाषा सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण, लयात्मक और संवादपरक है, जिसमें बाल-मन की चंचलता, खेल-खेल में शिक्षा और मूल्यबोध की छाया एक साथ दृष्टिगोचर होती है। उनकी शैली में हास्य और व्यंग्य का संतुलित प्रयोग बच्चों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है, साथ ही समाज की विसंगतियों और जीवन के सत्य की ओर भी संकेत करता है।

पाठक की भाषा और शैली की विशेषता यह है कि वह बालकों की दुनिया से निकटता रखती है। उनके शब्द चयन और वाक्य-विन्यास में वही सरलता और सहजता है जो किसी बालक के खेल और जिज्ञासा में देखने को मिलती है। वे भाषा को बोझिल या क्लिष्ट बनाने के बजाय संवादात्मक और रोचक रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ और कविताएँ बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी रोचक और अर्थपूर्ण सिद्ध होती हैं। उनकी भाषा में प्रयुक्त लयात्मकता और ध्वन्यात्मकता बाल कविता की परंपरा को जीवित रखती है और बच्चों की रुचि को बनाए रखती है। यह विशेषता विशेष रूप से उनकी कविताओं में दिखाई देती है, जहाँ छंद और तुकांत का समुचित उपयोग बच्चों को सहज ही आकर्षित करता है।

उनकी शैली की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता हास्य और व्यंग्य है। बाल साहित्य में अक्सर यह देखा गया है कि उपदेशात्मक स्वर बालकों को उबाऊ प्रतीत होता है, लेकिन अश्वनी कुमार पाठक अपनी शैली को उपदेशात्मक न बनाकर हास्य और व्यंग्य के माध्यम से गहन संदेश प्रदान करते हैं। उनकी रचनाओं में व्यंग्य कहीं तीखा नहीं होता, बल्कि हल्की मुस्कान उत्पन्न करने वाला होता है, जो बच्चों को सोचने पर भी मजबूर करता है। इस दृष्टि से वे बाल साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं मानते, बल्कि उसे शिक्षा, संस्कार और जीवन-दर्शन का संवाहक भी बनाते हैं।

पाठक की शैली में एक और प्रमुख विशेषता यह है कि वे बच्चों के जीवन-जगत से जुड़े चित्रण प्रस्तुत करते हैं। चाहे उनकी कविताओं में प्रकृति का वर्णन हो, पशु-पक्षियों की दुनिया का चित्रण हो या बच्चों के खेल-खेल में उत्पन्न संवाद हों, हर जगह बाल-मन का यथार्थ रूप सामने आता है। इस शैलीगत विशेषता ने उन्हें बच्चों का प्रिय साहित्यकार बना दिया है। वे बच्चों को कहानी या कविता में केवल श्रोता या पाठक के रूप में नहीं देखते, बल्कि उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। उनकी शैली बच्चों से संवाद करती है और उन्हें अपनी ही दुनिया में शामिल कर लेती है।

अश्वनी कुमार पाठक की भाषा और शैली में लोक तत्वों का प्रयोग भी उल्लेखनीय है। उन्होंने स्थानीय बोली, मुहावरे और लोकोक्तियों को सहज रूप से अपने साहित्य में समाहित किया है। यह न केवल बच्चों को उनकी जड़ों और लोक संस्कृति से जोड़ता है, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान से परिचित कराता है। इस प्रकार उनकी भाषा और शैली आधुनिकता और परंपरा का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। यह विशेषता उन्हें अन्य बाल साहित्यकारों से अलग बनाती है और उनकी रचनाओं को विशिष्टता प्रदान करती है।

उनकी भाषा की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें मूल्यबोध और नैतिक शिक्षा का स्वर छिपा रहता है। यद्यपि वे इसे प्रत्यक्ष रूप से उपदेशात्मक ढंग से नहीं प्रस्तुत करते, फिर भी उनकी भाषा और शैली के माध्यम से बच्चे सहज ही यह अनुभव कर लेते हैं कि जीवन में सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति, करुणा और सहयोग का कितना महत्व है। उनकी कहानियाँ और कविताएँ जीवन को सरल ढंग से समझाती हैं और यही उन्हें शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है।

समकालीन हिंदी बाल साहित्य में जहाँ एक ओर आधुनिक जीवन की जटिलताओं का चित्रण देखने को मिलता है, वहीं अश्वनी कुमार पाठक का साहित्य इस जटिलता को सरल भाषा और सहज शैली के माध्यम से हल्का-फुल्का बना देता है। वे कठिन समस्याओं को भी बालकों के लिए सरल रूप में प्रस्तुत करते हैं ताकि वे उन्हें समझ सकें। यह उनकी भाषा और शैली की बड़ी उपलब्धि है। वे बच्चों को न केवल वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों से परिचित कराते हैं, बल्कि उन्हें संवेदनशील और जागरूक नागरिक बनाने का भी प्रयास करते हैं।

यदि हम तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो पाठक की भाषा और शैली में प्रेमचंद, हरिकृष्ण देवसरे और रमाकांत जैसे बाल साहित्यकारों की परंपरा का प्रभाव तो है, परंतु वे अपनी विशिष्ट शैली के कारण अलग पहचान रखते हैं। उनकी शैली में आधुनिक शहरी जीवन के अनुभव भी मिलते हैं और ग्रामीण लोक संस्कृति की सादगी भी। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ व्यापक पाठक वर्ग के बीच लोकप्रिय रही हैं।

समग्रतः कहा जा सकता है कि अश्वनी कुमार पाठक के बाल साहित्य की भाषा और शैली में वे सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं जो एक आदर्श बाल साहित्य के लिए आवश्यक मानी जाती हैं। उनकी भाषा सरल, सहज, लयात्मक और संवादात्मक है, जबकि उनकी शैली हास्य-व्यंग्य, लोक तत्व, बाल-मन की अभिव्यक्ति और जीवनमूल्यों से परिपूर्ण है। उनकी रचनाएँ न केवल बच्चों का मनोरंजन करती हैं बल्कि उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण संदेश भी देती हैं। यही कारण है कि वे हिंदी बाल साहित्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। उनके साहित्य की भाषा और शैली की यह विशेषता है कि वह समय और समाज के साथ चलती है और बच्चों को हर युग में प्रासंगिक लगती है। इस दृष्टि से अश्वनी कुमार पाठक का योगदान हिंदी बाल साहित्य की धारा में अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी है।

संदर्भ सूची

- [1]. पाठक, अश्वनी कुमार. *बाल कविताएँ और कहानियाँ*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010.
- [2]. पाठक, अश्वनी कुमार. *हंसते-खेलते किस्से*. दिल्ली: नीलकंठ प्रकाशन, 2012.
- [3]. पाठक, अश्वनी कुमार. *बचपन के साथी*. लखनऊ: हिंदी साहित्य परिषद, 2014.
- [4]. शुक्ल, नामवर. *बाल साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2011.
- [5]. मिश्र, रामजी. *बाल साहित्य की भाषा और शैली*. प्रयागराज: गंगा प्रकाशन, 2015.
- [6]. तिवारी, शशि. *हिंदी बाल साहित्य का विकास*. वाराणसी: भारतीय साहित्य संघ, 2013.
- [7]. चौधरी, उषा. *बाल साहित्य में हास्य-व्यंग्य*. भोपाल: नीलिमा पब्लिशिंग, 2017.
- [8]. सिंह, महेंद्र. *आधुनिक हिंदी बाल साहित्य*. दिल्ली: राधाकृष्णन पब्लिशिंग, 2018.
- [9]. वर्मा, गोपाल. *हिंदी बाल साहित्यकार*. पटना: साहित्य भवन, 2016.
- [10]. गुप्ता, मंजू. *बाल कविता की शैलीगत विशेषताएँ*. जयपुर: सुरभि प्रकाशन, 2019.
- [11]. शर्मा, सुधा. *बाल साहित्य में संवाद और मनोरंजन*. दिल्ली: अनमोल पब्लिशिंग, 2020.
- [12]. पाठक, अश्वनी कुमार. *छोटे-छोटे किस्से*. दिल्ली: नीरज पब्लिशर्स, 2011.
- [13]. दुबे, अर्चना. *बाल साहित्य में लोक तत्व*. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन, 2014.
- [14]. जोशी, ममता. *हिंदी बाल साहित्य में भाषा की सहजता*. भोपाल: संस्कार पब्लिकेशन, 2018.
- [15]. अग्रवाल, सुनीता. *बाल साहित्य की प्रवृत्तियाँ*. दिल्ली: साहित्य संगम, 2015.
- [16]. पाठक, अश्वनी कुमार. *हंसते बचपन की कविताएँ*. नई दिल्ली: साहित्य प्रकाशन, 2017.

- [17]. वर्मा, अजय. *बाल साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ*. कानपुर: भारत बुक डिपो, 2019.
- [18]. ठाकुर, निर्मला. *हिंदी बाल साहित्य में नवीन प्रयोग*. लखनऊ: ज्ञान भारती, 2021.
- [19]. पाठक, अश्वनी कुमार. *मन के खिलौने*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2015.
- [20]. पांडेय, सुशील. *हिंदी बाल साहित्यकारों का योगदान*. वाराणसी: विद्या निकेतन, 2022.